17–6–67 ओमशांति प्रातःक्लास

अब बाप को बच्चों को रोज2 बोलने की दरकार नहीं रहती है कि अपने को आत्मा समझ अथवा देहीअभिमानी भव। अक्षर है तो सही––। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। आत्मा में 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। एक शरीर लेकर पार्ट बजाया फिर शरीर खलास हो जाता है। आत्मा तो अविनाशी है। तुम बच्चों को यह ज्ञान अब ही मिलता है। और कोई को इन बातों का पता नहीं है। अब बाप कहते हैं कोशिश कर जितना हो सके बाप को याद करो। धंधे आदि में लग जाने पर तो इतनो याद नहीं ठहरती है। गृहस्थ और व्यवहार में रह कर मुझे याद करना है फिर जितना हो सके पवित्र बनना है। ऐसे नहीं कि हमको नेष्ठा में बिठाओ। नेष्ठा अक्षर भी रांग है। वास्तव में है ही याद। माया के तूफान तो बहुत आवेंगे। कोई को क्या याद आवेगा, कोई को क्या। तूफान आवेंगे जरूर। फिर उस समय उनको हटाना पड़ता है। यहां पर बैठ2 भी माया बहुत तंग करती है। यही तो युद्ध है। जितना हल्का होगा उतना बंधन कम होंगे ;क्योंकि बंधन बहुत बढ़ते गये हैं ना। पहले तो निर्बंधन थे। फिर स्त्री को एडाप्ट करते हैं तो जो चीज माया का रूप सामने नहीं थी वो सामने आ गई। फिर बच्चे पैदा हो गये तो उनकी याद बढ़ेगी। अब तुम सबको यह भूल जाना है। एक बाप को ही याद करना है। इसलिए ही बाप की महिमा है। तुम्हारा मात–पिता आदि सब कुछ वो ही है। उनको ही सब कुछ समझो। वो तुमको भविष्य के लिए सब कुछ देते हैं। नये सम्बंध में ले जाते हैं। सम्बंध तो वहां पर भी होगा ही ना। ऐसे तो नहीं कि कोई प्रलय हो जाती है। तुम एक शरीर छोड़कर फिर दूसरा लेते हो। तो बच्चे अच्छे2 हैं वो जरूर उंचे कुल में जन्म लेंगे। तुम तो पढ़ते ही हो भविष्य 21जन्मों के लिए। पढ़ाई पूरी हुई और प्रारब्ध शुरू हुई। स्कूल्स में भी पहले पढ़कर फिर ट्रांसफर होते हैं ना। तुम भी ट्रांसफर हाने वाले हो शांतिधाम के लिए, सुखधाम के लिए। इस छी–छी दुनियां से छूट जावेंगे। इसका नाम ही है नर्क। सतयुग को कहा जाता स्वर्ग। यहां मनुष्य कितने घोर अंधेरे में हैं। धनवान जो हैं वो समझते हैं कि हमारे लिए तो यहां पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग होता ही है नई दुनियां में। यह पुरानी दुनियां तो खतम हो जानी है। जो कर्मातीत अवस्था वाले हैं वो कोई गर्भ में सजा थोड़े ही खावेंगे। स्वर्ग में तो सजायें होंगी ही नहीं। वहां पर तो गर्भ भी महल रहता है। कोई दुःख की बात नहीं। यहां पर तो गर्भ भी जेल है। जो कि सजायें खाते रहते हैं। इनका तो नाम ही स्वर्ग है। तुम कितनी बार स्वर्गवासी हुये हो?यही याद करे तो भी सारा चक याद रहे। एक2 बात लाखों2 रुपयों की है। यही भूल जाने पर देहअभिमान में आने पर माया नुकसान कर देती है। मेहनत है। मेहनत बिगर उंच पद पा ही नहीं सकते। बाबा को कहते हैं बाबा, हम तो अनपढ़े हैं। कुछ नहीं जानते हैं। बाबा को खुशी होती है ;क्योंकि यहां तो पढ़ा हुआ सब कुछ भुलाना होता है। देह सहित सब कुछ भूलो। बाकी शास्त्र आदि सबको भूलना है। यह तो थोड़े समय लिए शरीर निर्वाह लिए पढ़ना होता है। जानते तो हो ना कि यह सब कुछ खलास होने का है। जितना हो सके बाप को याद करो और रोटी ,टुकड़ खुशी से खाना है। वाह–वाह है गरीबी की इस समय। आराम से रोटी–टुकड़ खाना है। हब्श नहीं। आजकल तो अनाज मिलता ही कहां है। चीनी आदि भी धीरे2 करके मिलेगी ही नहीं। ऐस नहीं कि तुम ईश्वरीय सर्विस करते हो तेा गवर्मेंट तुमको यूं ही दे देगी। वो तो कुछ भी जानते नहीं हैं। यहां बच्चों को समझाया जाता है कि तुम सब मिलकर गवर्मेंट पास जाओ ,कहो कि हम सब मिलकर मां–बाप पास जाते हैं। उनको भेजनी होती है। यहां पर तुम सिर्फ कह देते हो कि है ही नहीं। लाचारी थोड़ी सी दे देते हैं। जैसे कोई फकीर को साहुकार लोग मुट्ठी भरकर दे देते हैं। गरीब होगा तो थोड़ा बहुत दे देंगे। चीनी आदि आ सकती है ;परंतु बच्चों का योग कम है। याद में ना रहने कारण देहअभिमान आता रहने कारण कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है। पढ़ाई से भी उतना नहीं जितना योग से होगा। वो ही बहुत कम है। माया याद को उड़ा देती है। ––––––को तो और ही अच्छी रीति पकड़ती है। अच्छे2

फर्स्ट क्लास बच्चों पर ग्रहचारी बैठती है। योग नहीं होता है तो नाम–रूप में फंस पड़ते हैं। यह बड़ी मंजिल है। अगर सच्ची मंजिल पानी है तो याद में बहुत रहना होगा। बाप तो कहते हैं कि ध्यान से भी ज्ञान अच्छा। ज्ञान से फिर याद अच्छी। ध्यान में जास्ती जाने पर भूतों की प्रवेशता हो जाती है। ऐसे बहुत हैं जो फाल्तू ही ध्यान में जाते हैं। क्या2 बोलते रहते हैं। उन पर विश्वास नहीं करना होता है। ज्ञान तो बाबा की मुरली में मिलता ही रहता है। बाप तो चैलेंज देते रहते हैं कि ध्यान कोई काम का नहीं है। बहुत माया की प्रवेशता हो जाती है। अहंकार आ जाता है। ज्ञान तो सबको मिलता रहता है। ज्ञान देने वाला शिवबाबा है। मम्मा को भी तो यहां से ही ज्ञान मिलता था ना। मम्मा भी आकर क्या करेगी?कहेगी मनमनाभव। दैवी गुण धारण करा। अपने को देखना है कि हम दैवी गुण धारण करते हैं। यही दैवी गुण धारण करने हैं। कोई को देखो तो अभी ही बड़ी फर्स्ट क्लास अवस्था है। खुशी2 से काम करते हैं। घंटे बाद––देखो तो लो भूत आ गया। खतम। फिर सुस्ती आती है। हमने तो यह भूल की। फिर सुधर जाते हैं। घड़ी2 का घड़ियाल बाबा के पास बहुत है। अभी ही देखो तो बहुत मीठा। बाबा कहेंगे मैं तो ऐसे बच्चे पर कुर्बान जाउं। घंटे बाद ही फिर कोई ना कोई बात में बिगड़ पड़ते हैं। हण–खण हैं ना। कोध आया तो सारी की कराई कमाई खतम हो गई। अभी2 कमाई तो अभी2 घाटा हो जाता है। सारा मदार याद पर ही है। ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझा लेवे ;परंतु मैं जो हूँ, जैसा हूँ यथार्थ रीति मुझे जाने,अपने को आत्मा समझे। उस रीति बच्चे थोड़े ही याद कर सकेंगे। मनुष्यों को मरते समय कहा जाता है भगवान को याद करो ;परंतु याद कर नहीं सकते। भक्तिमार्ग में कोई भी भगवान को जानते ही नहीं हैं। कोई भी ना वापस जा सकते हैं ना विकर्म विनाश हो सकते हैं। परम्परा से ऋषि–मुनि आदि कहते आते हैं कि हम नहीं जानते हैं–नहीं जानते हैं। वो तो फिर भी सतोगुणी थे। फिर आज की तमोप्रधान दुनियां कैसे जान सकती है?बाप कहते हैं कि यह ल.ना. भी नहीं जानते हैं। राजारानी ही नहीं जानते हैं तो फिर प्रजा कैसे जानेगी?कोई भी नहीं जानते हैं। अभी सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। तुम्हारे में भी कोई2 हैं जो यथार्थ रीति जानते हैं। कहते हैं बाबा, बार2 भूल जाते हैं। बाप कहत हैं कि कहीं भी जाओ सिर्फ बाप को याद करो। बड़ी भारी कमाई है। तुम 21जन्मों लिए निरोगी बनते हो। ऐसे बाप को अंतर्मुखी होकर याद करना चाहिए ना ;परंतु माया भुलाकर तूफान में ला देती है। इसमें अंतमुखी हो विचार–सागर–मंथन करना है। विचार–सागर–मंथन करने की बातें भी अभी की हैं। यह भी है पुरुषोत्तम बनने का युग। यह भी वंडर तुम बच्चों ने देखा है कि एक ही घर में तुम समझते हो कि हम तो संगमयुगी हैं। हाफपार्टनर वा बच्चा आदि कलियुगी है। कितना फर्क है। बहुत महीन बातें बाप समझाते हैं। घर में रहते हुये भी बुद्धि में यही रहे कि हम संगमयुगवासी हैं। बाकी और सारे चाचा, मामा,काका आदि सारे कलियुगी हैं। वो कांटे हैं। हम तो फूल बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह है अनुभव की बातें। प्रैक्टिकल में मेहनत करनी है। याद की ही मेहनत है। एक ही घर में एक हंस तो दूसरा बगुला। कोई तो फिर बड़े फर्स्ट क्लास भी होते हैं। अभी एक जोड़ी का स्वयंवर हुआ। बाबा ने तो पहली बार ही ऐसा देखा। आपस में भाकी भी नहीं पहनी। जैसे बाजू में कोई सोते हैं। या तो कहते थे अलग जाकर सोवें। शुरू से लेकर ही कितनी हिम्मत दिखाई है। कमाल है ना। ऐसे ही चलते रहें तो कितना उंचा पद पावेंगे। ऐसे भी बच्चे तो हैं ना। कोई तो देखो विकार के लिए कितना मारते,झगड़ा करते हैं। अवस्था तो वो होनी चाहिए। भाई–बहन हैं ना तो इकट्ठे सोना ही क्यां चाहिए?बाप हर प्रकार से राय देते रहते हैं। तुम जानते हो कि श्री–श्री की मत से हम श्रीनारायण बनते हैं। श्री माना ही श्रेष्ठ। सतयुग में ही नम्बरवन श्रेष्ठ। त्रेता में दो डिग्री फिर कम हो जाती है। यह ज्ञान तो बच्चों को अब मिलता है। तुम्हारे में कोई समझते नहीं हैं। कोई तो यहां पर बैठे हुये भी झपकी

खाते, उबासी लेते रहते हैं। उनको तो पिछाड़ी में जाकर बैठना चाहिए। यह ईश्वरीय सभा है बच्चों की ; परंतु कई ब्राह्मणी ऐसे2 को भी ले आती है। यह तो बाप ने धन दिया है हमको। एक2 वर्शन्स लाखों रुपयों का है। वेद,गीता,शास्त्र आदि पढ़ते2 आज कोई साहुकार थोड़े ही बन गये। और ही कंगाल बने हैं। है ;हीद्धभक्ति का राज्य तो उनको देखो कितना भभका है। शास्त्र पढ़ने वाले ही दुर्गति को पाते हैं। सिर्फ अपने पेट के लिए कमाई करनी होती है। सन्यासी लोग तो देखो कितनी बड़ी2 फ्लैट बनाते हैं। नहीं तो सन्यासियों को भक्ति करने का हुक्त नहीं है। उनका तो है ही निवृत्ति मार्ग। यह है प्रवृत्ति मार्ग। भक्ति है दुर्गति मार्ग। वो है ही प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए। भक्ति का फल भगवान ही देते हैं तुम बच्चों को। तुम हो पवित्र प्रवृत्ति मार्गवाले। जो ही फिर अपवित्र हुई है। वो ही फिर अपवित्र बने हैं। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। उनको ही तुमने गुरू बना लिया है। उनसे भला क्या मिलेगा?कुछ भी नहीं। हठयोगी क्या सिखावेंगे?कुछ ना कुछ हठयोग सिखाकर अपनी कमाई कर लेते है। अनेकों प्रकार की भूत विद्यायें भी हैं। क्या2 निकालते हैं। यह भी कोई ज्ञान है क्या?ज्ञान मिलता ही संगम पर। तुम कहते हो बाबा हम आये हैं आपसे सतयुग का वर्सा लेने। बाकी मनुष्य जो अपने को भगवान कहते हैं तो वो चोर हुये ना। कितने बड़े2 टाइटल देते हैं। श्री–श्री 108, 16108 तो माला होती है। बस, बाकी और मालायें गाई नहीं जातीं। रुद्रमाला और रुंड माला। और तुम नम्बरवार विष्णु की माला बनो। मीठे2 बच्चों को बाप बार2 समझाते हैं कि बच्चे यह सारी छी–छी दुनियां है। तुम्हारा है बेहद का वैराग। सन्यासियों का है हद का वैराग। बाप कहते हैं इस दुनियां में तुम जो कुछ भी देखते हो वो कल होगा ही नहीं। मंदिरों आदि का तो नाम निशान भी नहीं रहेगा। वहां उनको पुरानी चीजें देखने की दरकार ही नहीं। यहां तो पुरानी चीज का कितना मेला है। वास्तव में कोई चीज का मेला नहीं है सिवाय एक बाप के। बाप कहते हैं मैं नहीं आउं तो तुम राजाई कहां से लो?जिनको पता पड़ा है वो ही बाप से आकर लेते हैं। इसलिए ही कोटों में कोउ कहा जाता है। कोई भी बात में संशय नहीं आना चाहिए। भोग आदि का भी रस्म–रिवाज है। इनसे ज्ञान और याद का कोई कनेक्शन नहीं है। और कोई बात की तकलीफ नहीं। सिर्फ दो बातें हैं। अल्फ और बे बादशाही। बस। अल्फ भगवान को कहा जाता है। आंखों से भी ऐसे ही इशारा करते हैं। आत्मा इशारा करती है। भगवान कहते हैं भक्तिमार्ग में तुम मुझे याद करते हो। तुम सब मेरे आशिक हो। यह भी जानते हो कि बाबा कल्प2 आकर सभी मनुष्य मात्र को दुःख से छुड़कर शांति और सुखधाम में ले जाते हैं। तब बाबा ने कहा था कि विश्व में शांति कैसे स्थापन होती है वो समझाना है। एक सेकेंड में विश्व का मालिक 21जन्म लिए बनना है तो आकर समझो। घर में बार्ड लगा दो। तीन पैर पृथ्वी पर तुम बड़े ते बड़ा हास्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोल सकते हो। हास्पिटल से 21जन्म लिए निरोगी और पढ़ाई से स्वर्ग की बादशाही मिल जाती है। प्रजा भी कहेगी कि हम स्वर्ग का मालिक हैं। आज मनुष्यों को को जल्ला आती है ;क्योंकि नर्कवासी हैं ना। खुद कहत हैं कि हमारा बाप स्वर्गवासी हुआ। तो खुद तो नर्क ही में हैं ना। जब मरेगा तो फिर स्वर्ग में जावेगा। यह तो बड़ी सहज है। अच्छा काम करने वाले लिए तो खास कहत हैं कि यह तो बड़ा महादानी था। यह स्वर्गवासी हुआ ;परंतु जाता तो कोई नहीं है। नाटक पूरा होता है तो सब स्टेज पर आ जाते हैं। यह लड़ाई भी तब लगेगी जबकि यह एक्टर्स यहां आकर खड़े हुये होंगे। फिर लौटेंगे। शिव की बारात कहते हैं ना। शिवबाबा के संग सब आत्मायें जावेंगी। होल लाट। अब 84जन्म पूरे हुये अब इन जुत्ते को छोड़ना है। जो सांप पुरानी खल को छोड़ देता है। नई ले लेते हैं। तुम फिर नई खल सतयुग में लेंगे। श्रीकृष्ण कितना सुंदर है। कितनी उसमें कशिश है। फर्स्टक्लास खल है उनकी। ऐसी ही हम भी लेंगे। कहते हो ना तो फिर पुरुषार्थ भी पूरा करना है। ओम।